प्रोफेसर प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी
माननीय कुलपति महोदय

प्रोफेसर नरेन्द्र मिश्र
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

एक परिचय

हिन्दी हैं हम

उद्देश्य कथन

हिन्दी साहित्य का भारतीय तथा विश्व भाषाओं के साहित्य के साथ संवाद और तुलनात्मक अध्ययन एवं शोध इस विभाग की मुख्य गतिविधियाँ हैं। विभिन्न भाषाओं के साहित्य से संवाद की संभावनाओं का संधान एवं शोध विभाग की उच्च प्राथमिकता है। विभाग में ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों और कलाओं के साथ साहित्य के घनिष्ठ संबंध को दृष्टिगत रखते हुए अंतरानुशासनिक अध्ययन एवं शोध पर विशेष बल दिया जाता है। युवा पीढ़ी को सहित्यिक रूप से संस्कारित करने हेतु विभाग सतत् कार्यरत है। हिन्दी विभाग समग्रता में साहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के लिए प्रतिबद्ध है।

संचालित पाठ्यक्रम

सामान्य हिन्दी –आधार पाठ्यक्रम
(कला, वाणिज्य एवं विज्ञान)
बी. ए. – हिन्दी साहित्य
बी. ए. – (ऑनर्स)हिन्दी साहित्य
एम.ए. - हिन्दी
एम.फिल. – हिन्दी
पीएच.डी. - हिन्दी

परिचय

1962 ई. में मरुधरा की इस पावन भूमि पर देश के जाने माने दार्शनिक राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने जोधपुर विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। विश्वविद्यालय स्थापना वर्ष में ही हिंदी विभाग का संचालन प्रारंभ हुआ। हिंदी विभाग के प्रथम अध्यक्ष के रूप में शीर्षस्थ आलोचक तथा कवि **डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'** की नियुक्ति हुई। हिंदी विभाग को भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित **प्रो. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह** और हिंदी के प्रख्यात आलोचक **प्रो.नामवर सिंह** की अध्यक्षता का सौभाग्य प्राप्त हुआ। **महाकवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** का भी सक्रिय सहयोग विभाग को प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त सुविख्यात आलोचक **प्रो. मैनेजर पाण्डेय, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित,** लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामप्रसाद दाधीच, काव्यशास्त्र मर्मज्ञ डॉ. वेंकट शर्मा, डॉ. चेतन प्रकाश पाटनी, तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ प्रो. जगदीश शर्मा, लोक साहित्य एवं भाषा वैज्ञानिक प्रो. मदनराज डी मेहता तथा प्रो. सोहनदान चारण, हिन्दी की वरिष्ठ कवयित्री तथा राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत डॉ. सावित्री डागा, काव्यशास्त्र, पाठालोचन एवं मध्यकालीन साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. पूर्णदास तथा प्रो. देवेन्द्रकुमार सिंह गौतम, प्रसिद्ध आलोचक व कवि प्रो. कौशलनाथ उपाध्याय, प्रो. रामबक्ष जाट तथा प्रो. सूरजप्रसाद पालीवाल ने भी विभाग को सुशोभित किया। प्रारंभिक दौर से ही देश के वरिष्ठ साहित्यकारों तथा आलोचकों का सान्निध्य विभाग को प्राप्त हुआ। नींव मजबूत हो तो भवन स्वतः ही सुदृढ़ हो जाता है, इसी सिद्धान्त के अनुरूप हिंदी विभाग निरन्तर अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कराता आया है। राष्ट्रभाषा के उन्नयन एवं हिंदी साहित्य और भाषा के विकास हेतु विभाग अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए सतत् कार्यरत है।

विभाग में वर्तमान में 3 प्रोफेसर, 1 एसोशिएट प्रोफेसर तथा 13 असिस्टेंट प्रोफेसर कार्यरत हैं।

प्रोफेसर	एसोशिएट प्रोफेसर	असिस्टेंट प्रोफेसर
• डॉ. नरेन्द्र मिश्र (अध्यक्ष) • डॉ. किशोरीलाल रैगर • डॉ. श्रवण कुमार मीणा	• डॉ. महीपाल सिंह राठौड़	• डॉ. श्रवण कुमार • डॉ. कुलदीप सिंह मीणा • डॉ. कीर्ति माहेश्वरी • डॉ. प्रेमसिंह • श्री महेन्द्र सिंह • डॉ. कामिनी ओझा • डॉ. विनिता चौहान • डॉ. मीता सोलंकी • डॉ. कमला चौधरी • डॉ. भरत कुमार • डॉ. प्रवीण चन्द • श्री फत्ताराम नायक • डॉ. अरविन्द कुमार जोशी

हमारे वर्तमान एवं पूर्व छात्र

वर्तमान छात्र

- वर्तमान में स्नातकोत्तर कक्षाओं में 80 प्रवेश स्थान है, स्नातक कक्षाओं में हिंदी भाषा के 4000 तथा हिंदी साहित्य के 1700 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

छात्र परिषद्

- स्नातकोत्तर कक्षाओं में हर वर्ष विभागीय छात्र परिषद् का गठन किया जाता है जिससे वर्षभर संचालित होने वाली शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में छात्रों की सक्रिय सहभागिता बनी रहती है।

पूर्व छात्र

- विभाग के पूर्व छात्र के रूप में पूर्व राज्यसभा सदस्य **पद्मभूषण श्री नारायण सिंह माणकलाव** के अतिरिक्त अनेक शिक्षा एवं भाषाविद्, भारतीय तथा राज्य प्रशासक, न्यायविद, पत्रकार तथा लेखक देश विदेश में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

शोध

उपलब्धियाँ

- विभाग से 1250 से अधिक विद्यार्थी पी-एच.डी. शोध उपाधि, 55 एम. फिल. शोध उपाधि, 05 डी. लिट. शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग में शोध विषयों की सीमा केवल हिंदी तक सीमित न होकर अन्तरअनुशासनात्मक भी रही है। जिससे वर्तमान संदर्भों की जरूरतों तथा नवीन साहित्यिक विमर्शों को विश्लेषित करने का महत्वपूर्ण कार्य विभाग के शोधार्थियों द्वारा किया जाता है।

अनुसंधान के क्षेत्र

- विभाग में सौन्दर्य-शास्त्र, नाटक और रंगमंच, भाषा विज्ञान, लोक साहित्य, अनुवाद और पत्रकारिता, पाठालोचन, साहित्य का इतिहास, प्रयोजनमूलक हिंदी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, इतिहास-दर्शन तथा समकालीन भारतीय साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, नव विमर्श (दलित, आदिवासी, स्त्री विमर्श, प्रवासी साहित्य) जैसे आधुनिक विषयों के अध्यापन एवं शोध की व्यवस्था उपलब्ध है।

संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन

राष्ट्रीय

- सूर पंचशती समारोह, 1979
- निराला संगोष्ठी
- भारतीय भाषाओं में जीवनी साहित्य और आत्मकथा, 1987
- हिन्दीभाषी प्रदेशों का लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति, 2000
- साहित्य और इतिहास, 2001
- आधुनिक हिन्दी कविता: तब, अब और आगे, 2008
- समकालीन हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श, 2011
- 21 वीं सदी की चुनौतियाँ : मीडिया और साहित्य, 2012
- निर्गुण संत परम्परा : वर्तमान संदर्भ, 2013
- आदिवासी साहित्य और समाज, 2013
- डिंगल काव्य-परम्परा और सामयिक संदर्भ, 2014
- आदिवासी लेखन :अस्तित्व और अस्मिता का सवाल, 2014
- लोक सांस्कृतिक परम्परा एवं सामयिक संदर्भ, 2014
- भारतीय भाषाओं के साहित्य में भारतीय मूल्य,2016
- हिन्दी कथा साहित्य: नई सदी का स्वर, 2017
- हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिकता, 2019
- महात्मा गाँधी का साहित्य, समाज एवं राजनीति पर प्रभाव, 2019
- हाशिए का साहित्य, समाज और संस्कृति,2019

अन्तरराष्ट्रीय

- समकालीन विमर्श सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य, 2015

- स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों का अवदान, 2018

कार्यशालाएँ

- तकनीकी माध्यमों में हिन्दी अनुप्रयोग की सम्भावनाएँ, 2004
- तकनीकी व इजीनियरिंग शब्दावली कार्यशाला, 2005
- संचार माध्यमों में हिन्दी अनुप्रयोग, 2008
- उच्च शिक्षा में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग, 2016

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कार्यक्रम एवं शोध परियोजनाएँ

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

- विभाग ने 21 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम विभाग एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में आयोजित किए हैं तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानव संसाधन विकास केन्द्र के तत्त्वावधान में एक आमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया है।

शोध परियोजना

- डॉ.सूरजप्रसाद पालीवाल के निर्देशन में एक वृहद शोध परियोजना पूर्ण।
- प्रो. श्रवण कुमार मीणा के निर्देशन में एक वृहद शोध परियोजना "समकालीन हिंदी कहानी-आदिवासी संदर्भ" विषयक पूर्ण ।
- लघु शोध परियोजना के अन्तर्गत विभाग के अनेक प्राध्यापकों द्वारा कार्य किया जा रहा है।
- वर्तमान में विभाग के 50 शोधार्थियों को JRF-SRF प्राप्त है तथा कुल 220 विद्यार्थी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) में उत्तीर्ण हो चुके हैं। 5 विद्यार्थियों ने PDF के रूप में भी शोध कार्य सम्पूर्ण किया है।

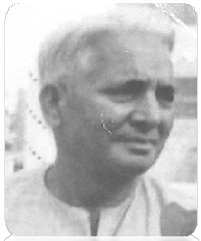

विभाग के गौरव और गौरवशाली विभाग

डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

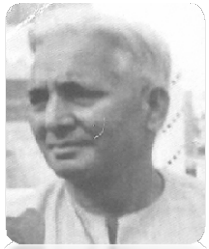

सन् 1927 ई. में आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम.ए. किया और उसी वर्ष कान्यकुब्ज कॉलेज लखनऊ में हिंदी और तर्कशास्त्र विषय के अध्यापक के रूप में आपकी नियुक्ति हो गई। सन् 1936 ई. में उन्होंने डॉ. धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में काव्य शास्त्र पर डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी-साहित्य में यह प्रथम डी.लिट्. थी। सन् 1937 ई. में 'रसाल' जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हो गए। अक्तूबर-नवंबर 1951 ई. में वे गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष बने, जहाँ 3-4 वर्ष तक रहकर वे **जोधपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग** के आचार्य एवं संस्थापक अध्यक्ष नियुक्त हुए, जहाँ से अगस्त 1965 में अध्यापकीय जीवन की क्रियाशीलता से अवकाश ग्रहण कर लिया।

हिन्दी विभाग के संस्थापक अध्यक्ष
सन् 1962 से 1965

रचनाएँ

नाट्य निर्णय,
रस छन्दालंकार,
भोजराज (खंडकाव्य),
आलोचनादर्श,
सूर समीक्षा,
साहित्यप्रकाश,
अलंकार पीयूष,
काव्य पुरुष,
भाषा शब्द कोष,
उद्धव ब्रजांगना,
अलंकार कौमुदी
आदि कुल 39 ग्रंथ

हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' का स्थान अनेक रूपों में अप्रतिम है। वे अनेक विद्या शाखाओं के ज्ञाता और शास्त्रों के अधिकारी विद्वान् थे। भारतीय विश्वविद्यालयों में वे हिंदी के ऐसे प्रोफेसर थे, जिनके कंठ पर सरस्वती विराजमान थी। उन्हें 'कंठस्थ' विद्या पर विश्वास था। वे उसे ही विद्या मानते थे, जो मस्तिष्क में हो, उसे ही काव्य कहते थे, जो कंठ में हो।

उनकी स्मरणशक्ति अद्भुत थी और तर्कबुद्धि अप्रतिहत। किसी भी विषय पर वे अपनी विलक्षण स्मरणशक्ति के बल पर घंटों व्याख्यान दे सकते थे, जिसमें अन्य भाषाओं के प्रासंगिक उद्धरण भी होते थे।

आधुनिक हिंदी काव्यांदोलनों के विपरीत वे रीति काव्य-प्रवृत्तियों के पोषक और ब्रजभाषा-काव्य के कट्टर समर्थक थे। आधुनिक काल में वे ब्रजभाषा के एकमात्र विश्रुत आचार्य और अलंकार शास्त्र के महापंडित थे

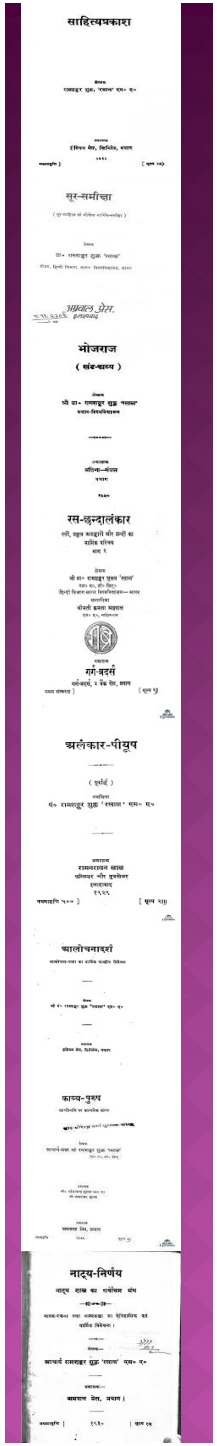

कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह

हिन्दी विभागाध्यक्ष, 1965 से 1968 ई.

हिंदी को गीति काव्य, खंड काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि के रूपों से अनुपम उपहार दिए।

कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह जी का जन्म 1910 में सीतापुर जिले में हुआ था। वे **जोधपुर** एवं बड़ौदा **विश्वविद्यालय में हिन्दी विमाग के अध्यक्ष रहे**। 1968 से 1970 तक वे भारतीय हिन्दी परिषद के सभापति भी रहे। प्रसिद्ध साहित्यकार बाबू श्यामसुन्दर दास, अमृतलाल नागर व आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उनके समकालीन व अनन्य मित्र थे। आचार्य द्वारा लिखित साहित्य ने उन्हें हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है। उन्होनें **"मेघमाला"** के गीतों का अनुपम उपहार हिन्दी जगत को देकर गीत रचना के क्षेत्र में नूतन क्रांति का प्रारम्भ किया। उनके नाटक ऐतिहासिक महत्व के हैं जिस में **"तुलसीदास"** शीर्ष बिन्दु पर हैं। यह एक विशिष्ट एवं निराली शैली में लिखे गये हैं।

चंद्र प्रकाश जी की प्रमुख कृतियाँ

आलोचना - हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, हिंदी नाट्य साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, मध्यकालीन नाट्य परम्परा और उनका युग, नाटककार भारतेंदु और उनका युग, नाटककार प्रसाद और उनका युग, भुज कच्छ की ब्रज पाठशाला, समसामयिक हिंदी नाट्य आलोचना आदि

काव्य संग्रह – शंपा, मेघमाला, बा और बापू, प्रतिपाल, अपराजिता, विजया, शंबूक

महाकाव्य - रामदूत, ऋषभदेव, संकटमोचन

नाटक - जनकवि जगनिक, कविकुलगुरु, कविवर नरोत्तमदास, पाँच एकांकी, आचार्य चाणक्य, तुलसीदास, स्वराज की जननी आदि

यजुर्वेद का काव्य अनुवाद (टिप्पणी सहित), सामवेद का काव्य अनुवाद (टिप्पणी सहित), अथर्ववेद की टिप्पणी अनुवाद

उनके द्वारा अमेरिका में स्थापित अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति हिंदी भाषा और साहित्य के अंतरराष्ट्रीय संभावनाओं की खोज में अपनी क्रियाशीलता के लिए विख्यात संस्था है।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

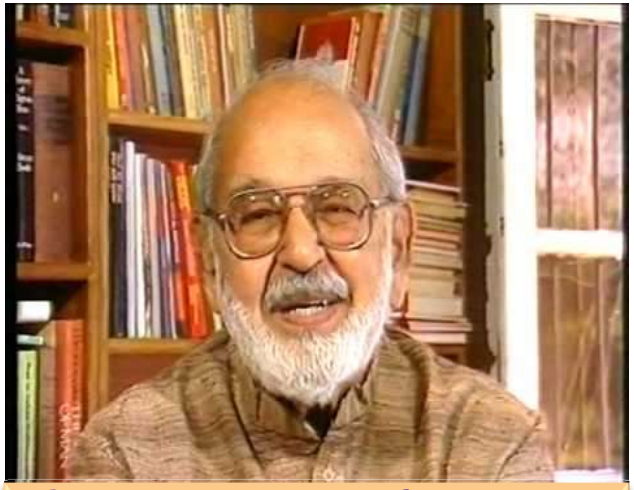

जोधपुर विश्वविद्यालय में अध्यापन

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय को कवि, शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित-निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकान्तमुखी प्रखर कवि होने के साथ-साथ वे एक अच्छे फोटोग्राफर और सत्यान्वेषी पर्यटक भी थे। देश-विदेश की यात्राएं की। उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। हिन्दी कहानी को आधुनिकता की दिशा में एक नया और स्थायी मोड़ देने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। निस्संदेह वे आधुनिक साहित्य के एक शलाका-पुरुष थे। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु के बाद एक दूसरे आधुनिक युग के प्रवर्तक।

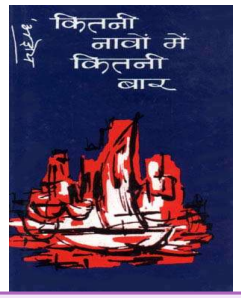

साहित्य अकादमी पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

कविता संग्रह:-भग्नदूत 1933, चिन्ता 1942, इत्यलम् 1946, हरी घास पर क्षण भर 1949, बावरा अहेरी 1954, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये 1957, अरी ओ करुणा प्रभामय 1959, आँगन के पार द्वार 1961, कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970), सागर मुद्रा (1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बाँक पर छाया (1981), प्रिज़न डेज़ एण्ड अदर पोयम्स (अंग्रेजी में, 1946)

- **कहानियाँ:**-विपथगा, परम्परा , कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल।
- **उपन्यास:**- शेखर एक जीवनी - प्रथम भाग(उत्थान), द्वितीय भाग(संघर्ष)नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी ।
- **यात्रा वृतान्त:**- अरे यायावर याद रहेगा, एक बूँद सहसा उछली।
- **निबंध संग्रह :** सबरंग, त्रिशंकु, आत्मनेपद, आधुनिक साहित्य: एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल।
- **आलोचना:**- त्रिशंकु, आत्मनेपद , भवन्ती, अद्यतन।
- **संस्मरण:** स्मृति लेखा।
- **डायरियां:** भवंती, अंतरा और शाश्वती।
- **विचार गद्य:** संवत्सर।
- **नाटक:** उत्तरप्रियदर्शी।
- **जीवनी:** रामकमल राय द्वारा लिखित शिखर से सागर तक

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं साथ अज्ञेय ने तारसप्तक (तीन) जैसे युगांतरकारी काव्य संकलनों का भी संपादन किया

साँप !
तुम सभ्य
तो हुए
नहीं
नगर में
बसना
भी तुम्हें
नहीं
आया।
एक बात
पूछूँ--
(उत्तर
दोगे?)
तब कैसे
सीखा
डँसना--
विष कहाँ
पाया?

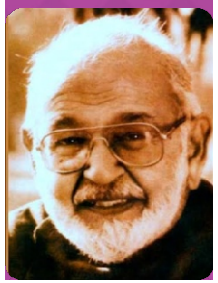

प्रोफेसर नामवर सिंह

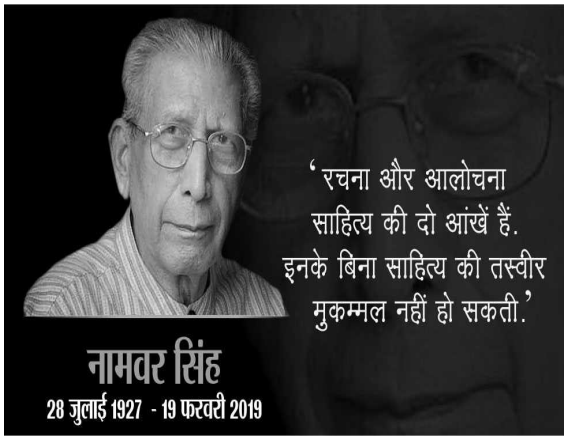

प्रोफेसर नामवर सिंह जोधपुर विश्वविद्यालय में (सन् 1970 से 1974 ई.)

नामवर सिंह

हिन्दी के शीर्षस्थ लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रिय शिष्य रहे। अत्यधिक अध्ययनशील तथा विचारक प्रकृति के नामवर सिंह हिन्दी में अपभ्रंश साहित्य से आरम्भ कर निरन्तर समसामयिक साहित्य से जुड़े हुए आधुनिक अर्थ में विशुद्ध आलोचना के प्रतिष्ठापक तथा प्रगतिशील आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षर थे। नामवर सिंह आधुनिकता में पारंपरिक थे और पारंपरिकता में आधुनिक। उन्होंने हिन्दी आलोचना को नयी पहचान दिलाई। वे वास्तव में *नामवर* आलोचक थे।

सम्मान

- साहित्य अकादमी पुरस्कार – 1971 "कविता के नये प्रतिमान" के लिए
- शलाका सम्मान , हिन्दी अकादमी, दिल्ली
- 'साहित्य भूषण सम्मान' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
- शब्द साधक शिखर सम्मान - 2010 ('पाखी' तथा इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसायटी)
- महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान - 2010

जोधपुर विश्वविद्यालय के अतिरिक्त - काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अध्यापन ।

- नामवर सिंह महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय, विश्वविद्यालय, वर्धा के दो बार कुलाधिपति (चांसलर)
- राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान के अध्यक्ष (1993-96)
- 'जनयुग' और 'आलोचना' नामक दो हिन्दी पत्रिकाओं का वर्षों तक सम्पादन

प्रोफेसर सूर्यप्रसाद दीक्षित

जोधपुर विश्वविद्यालय
1963 से 1976 ई.

सम्पादन
'उत्कर्ष', 'उद्भव', 'अवधी', 'ज्ञानशिखा', 'शोध', 'कुलसन्देश', 'साहित्य भारती', 'संचारश्री, 'चाणक्य', 'प्रभास', 'खोज'

संस्थापक अध्यक्ष: पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
शोध: छायावादी गद्य (पी-एच. डी.) व्यावहारिक सौंदर्य-शास्त्र (डी. लिट्.)
निर्देशन: हिंदी तथा पत्रकारिता में लगभग 65 पी-एच. डी., डी. लिट्.
प्रकाशन: 54 शोध-समीक्षा ग्रंथ एवं लगभग 450 लेख
संबंधित संस्थाएँ: पूर्व अध्यक्ष, भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग, अध्यक्ष, पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ़ इंडिया, लखनऊ, अध्यक्ष, बिहारी पुरस्कार, बिरला फाउंडेशन, नई दिल्ली, मंत्री, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।
स्फुट: हिंदी की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण संस्थाओं से संबद्ध, देश के 30 विश्वविद्यालयों की पाठ्य समिति, शोध समिति में विशेषज्ञ, लगभग 500 सेमिनारों, रेडियो, टी. वी. में सहभागिता, 10 देशों का भ्रमण। इन्हीं सेवाओं पर 'दीक्षागुरु' (अभिनंदन ग्रंथ), 'साहित्य- मनीषी' (समीक्षा) प्रकाशित तथा कई शोध ग्रंथ प्रस्तुत। 'प्रयोजनमूलक हिंदी' विषय के पुरस्कर्ता।

स्नेहोपहार:
'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' से 'साहित्य भूषण' सम्मान, 1998; 'दीनदयाल उपाध्याय सम्मान', उ.प्र., 2002; हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि 1999; इण्टरनेशनल सेण्टर, कैम्ब्रिज से 'इण्टरनेशनल मैन ऑफ दी इयर' 1998 से 2013; 'अमेरिकन इंस्टीट्यूट' से 'डिसटिंगिस्ट परसनालिटी ऑफ दी वर्ड' 1998 से 2013 । तुलसी अवधश्री सम्मान-2014 वागीश्वरी सम्मान 2017

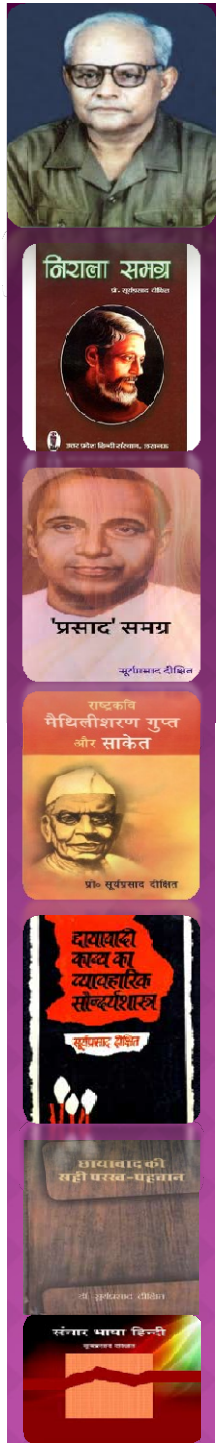

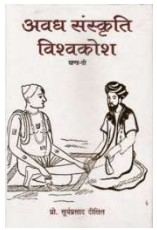

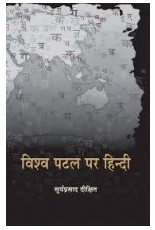

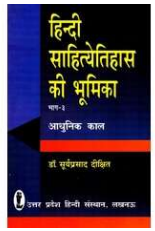

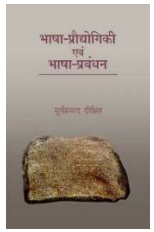

प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय

जोधपुर विश्वविद्यालय में 6 वर्षों तक अध्यापन

सम्मान

- हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'शलाका सम्मान
- राष्ट्रीय दिनकर सम्मान
- रामचन्द्र शुक्ल शोध संस्थान, वाराणसी का गोकुल चन्द्र शुक्ल पुरस्कार
- दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा सुब्रह्मण्य भारती सम्मान

मैनेजर पाण्डेय हिन्दी में मार्क्सवादी आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक हैं। उन्हें गम्भीर और विचारोत्तेजक आलोचनात्मक लेखन के लिए पूरे देश में जाना जाता है। मैनेजर पाण्डेय का जन्म 23 सितम्बर, 1941 को बिहार प्रान्त के वर्तमान गोपालगंज जनपद के गाँव 'लोहटी' में हुआ। उनकी आरम्भिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई, जहाँ से उन्होंने एम.ए. और पीएच. डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं ।आजीविका के लिए अध्यापन का मार्ग चुनने वाले मैनेजर पाण्डेय जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के भाषा संस्थान के भारतीय भाषा केन्द्र में हिन्दी के प्रोफेसर रहे हैं। वे जेएनयू में भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इसके पूर्व पाण्डेय जी बरेली कॉलेज, बरेली और **जोधपुर विश्वविद्यालय में अध्यापन किया**।

डॉ० मैनेजर पांडेय के मुताबिक, "विचारधारा के बिना आलोचना और साहित्य दिशाहीन होता है। आलोचना में पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग ईमानदारी से होना चाहिए क्योंकि पारिभाषिक शब्द विचार की लम्बी प्रक्रिया से उपजते हैं। साहित्य की सामाजिकता की खोज और सार्थकता की पहचान करना ही आलोचना की सबसे बड़ी चुनौती है। "पाण्डेय जी की साहित्य समीक्षा जगत में अपनी एक अलग पहचान है। समकालीन साहित्य के साथ भक्तिकाल और रीतिकाल के साहित्य पर पाण्डेय जी ने सर्वथा नवीन दृष्टि से विचार किया और नवीन स्थापनाएँ दीं। जिस रीतिकाल को राग और रंग का साहित्य कहा जाता है वहाँ भी वे समकालीन चेतना के बीज तलाश लेते हैं। रीतिकाल के प्रमुख हस्ताक्षर कवि पद्माकर की कविता में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति जनचेतना को सिर्फ मैनेजर पाण्डेय ही रेखांकित कर सकते थे ।

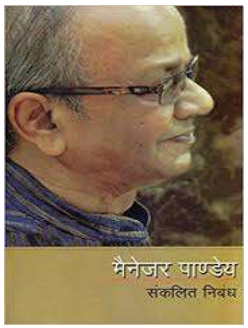

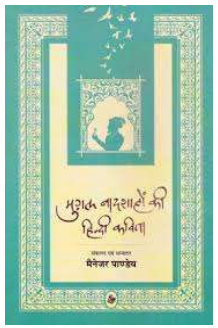

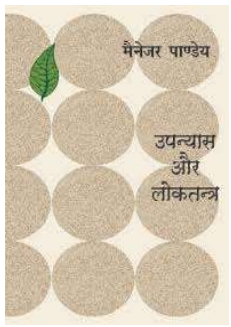

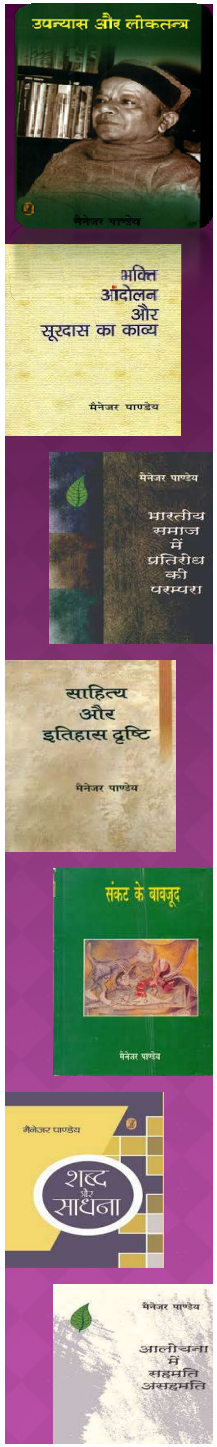

विभागीय पुस्तकालय

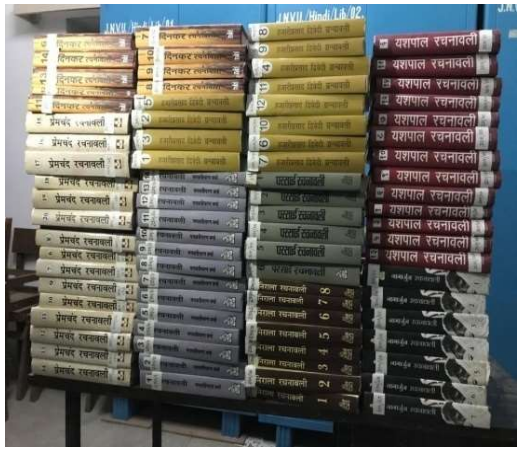

हिन्दी विभाग का अपना एक समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें विषय से संबंधित श्रेष्ठ एवं उपयोगी पुस्तकों का संकलन किया गया है। यह पुस्तकालय विभागीय सदस्यों, शोधार्थियों तथा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों हेतु उपयोग में लाया जाता है। इस पुस्तकालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य समान संस्थाओं की विभिन्न योजनाओं के तहत तथा विश्वविद्यालय के स्वयं के मद से पुस्तकों की खरीद की जाती है। कुछ पुस्तकें विद्वानों द्वारा भेंट स्वरूप भी प्राप्त हुई हैं। वर्तमान में पुस्तकालय में अनेक लेखकों की ग्रंथावलियाँ, काव्य ग्रंथ, आलोचनात्मक ग्रंथ, कथा एवं कथेतर गद्य साहित्य संबंधी पुस्तकें, भाषा, भाषा विज्ञान तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी के ग्रंथ, पाठ्यक्रम की पाठ्य पुस्तकों के साथ राजस्थानी के ग्रंथों को मिलाकर करीब 2000 पुस्तकें हैं। 350 से अधिक शोध ग्रंथ भी पुस्तकालय में संगृहीत हैं।

भावी योजनाएँ

❖रूसा के आर्थिक सहयोग से स्वतंत्र रूप से हिंदी भवन का निर्माण
❖पूर्व छात्र परिषद (एलुमनि) का गठन करना
❖हिंदी विभाग से शोध पत्रिका का प्रकाशन करना
❖भक्त शिरोमणि मीराबाई तथा प्रेमचंद के नाम से अध्ययन शोध पीठों की स्थापना की योजना
❖नामवर सिंह व्याख्यानमाला का पुन:संचालन करना
❖विभागीय स्तर पर पाठ्य पुस्तकों का निर्माण व प्रकाशन करना
❖महान साहित्यकार अज्ञेय का चित्र व उनके परिचय युक्त बोर्ड का निर्माण करवा कर विभाग में स्थापित करना
❖वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल अधुनातन विषयों के पाठ्यक्रमों का संचालन यथा - तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद साहित्य, हाशिये का साहित्य आदि को सम्मिलित करना
❖उपलब्ध साहित्यकारों तथा विद्वानों के विशेष व्याख्यान
❖महीने में कम से कम एक बार छात्र संवाद अथवा गोष्ठी का आयोजन
❖विलुप्त होते हस्तलिखित ग्रंथों का सर्वेक्षण, संपादन तथा प्रकाशन
❖विलुप्त होते लोक साहित्य का सर्वेक्षण, संकलन व प्रकाशन
❖यू.जी.सी., आई.सी.एस.एस.आर. के सहयोग से विभाग में शोध परियोजनाओं का संचालन

धन्यवाद

Thank You

डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

डॉ. प्रेमसिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।